श्री दवकाजीना पट्पुत्रना

AND JIH. SIKE

मूर्वमहुष्यना अपसक्षणोन् संग्रह.

आ पुस्तक समारनी असारता द्वार्यमान है।बार्या मर्व कारने मणवा बांचवा माटे उपयोगी जाणीने ठपावी प्रसिद्ध करनार

बालाभाइ छगनलाल शाह

नेन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार.

के कीकाभवनी पेक अवदाबाद
आईति बीजी प्रदक्षिणक

30.7

संबंध १९७७ सने १९२।

किम्मत त्रण आना,

なないと

7





MHEISIE.

नवीन खुश खबर.

महारं त्यां जनपर्मनां, तत्व ज्ञाननां, अध्यात्मनां अने दरेक जातनां पूस्तका जध्यावंथ घणान फायदेशी मळे छे. माटे अमारे त्यां आवतुं अलता नहीं. अमारे। पुस्तका मिसद्ध करवाना तथा वेचवाना वहीवट घणा जुनामां जुनो अने शसिद्ध छे.

अपारे स्यांथी लायबेरीजा, पुस्तकालया जनशाळाओने सार्क घणाज फायदेथी पूस्तका माकलदामां आवे छे. वधु विगत माई सूचीपत्र एक आनानी टीकीट बीडी मंगावयुं.

एटखुं तो निर्विवाद छे के

जेनां अझानरुपी पडळ खुळां यवानां होय, देशनो, केामनो अने स्वपरने। उदय ए जेमने। उदेश होय, उंची स्थितिए चडी कांइ पण कीर्तीनां कार्यों करवानुं जेना नसीवमां होय, संतानोने देशना बीरा बनाववाने जेनुं निशान होय, अने आ असार संसारने छोडी मुक्ति मेळवी जीवन साफस्य करवानुं होय तेनेन उत्तम पुस्तको बांचनानुं मन थाय छे.

> बालाभाइ छगनलाल ाहरा. पुरतको पगट करनार ने वेचनाए. ठे. कीकाभटनी पोळ, असद्यादाद.

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय

[गुजराती कॅमीराभिट विभाग्]

अनुक्रमांक 🗲 🦳 ा वर्गाक

पुस्तकतं नाम हिप३२०००। भटपुत्रोको यथ

विषय 🖇 – 🕻 🖔

भू अम्हादाह भू श्रीशांतिनाचाय नमोनमः॥ ॥अथ श्रीदेवकीजीना षट्पुत्रनो रास प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥नेमजिणंद समोसत्या, त्रण्ये काखना जाण॥ त्रविक जीवनें तारवा, प्रभु बोख्या स्रमृत वाण ॥१॥ वाणी सुणी श्रीनेमीनी बूझ्या उए कुमार ॥ मात पितानें पूडीनें, खीधो संयम जार ॥१॥ वेराग्यें संयम लीठ, धर्म सामग्री नीव॥ उठ उठने पारणे, प्रभु कर दीठजावजीव ॥ ३ ॥ निरंतर तपस्या करे, उए महोटा स्रणगार स्राङ्गा लेइ जगवंतनी, करे स्रातम उद्धार ॥१॥ नेम जिणंद समोसत्न, द्वारिका नगरी म कार॥ एक दिन उठने पारणे, वयरागी स्रणगार॥ ५॥

्रा। ढास पहेसी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देशी ॥ ॥व्यागना लेइ जगवंतनी जी, वए ते बंधव सार ॥गोचरी करवाने नीकछा जी, द्वारिका नगरी मजा र ॥ साधुजी जलें रे पधारिया जी ॥ १ ॥ ए ब्यांक षी ॥ ब्यनेकसेन ब्यादे करी जी, वए सरिखा ब्याण गार॥ रूप सुंदर ऋति शोजता जी, नख कुवेर ऋतु हार ॥ साण ॥ २ ॥ त्रण्य संघाने करी संचल्या जी, मुनिवर महा ग्रणधार ॥ ईरिया समितियें चाखतां जी, षट कायने हितकार ॥ सा०॥ ३ ॥ पाके पाके फिरतां थका जी, गोचरीयें मुनिराय ॥ मुनिवर दो य तिहां ऋाविषा जी, वसुदेवजीना घरमांय ॥ सा० ॥ ४ ॥ देवकी देखी राजी हुइ जी, जर्खे पधास्त्रा मु निराय॥ सात त्राठ पग साँहमा जइ जी, लळी ल ळी लागेजी पाय॥ सा० ॥ ५ ॥ हाथ जोमीने वंद न करे जी, तरण तारण मुनिराय॥ दरिसण दीग स्वामी तुम तणां जी, जब जयनां दुःख जाय ॥ सा० ॥६॥ आज जली रे जागी दिशा जी, धन्य दिवस माहरो त्याज॥ मुनिवर स्थम घर स्थाविया जी, तर ण तारण जहाज ॥ सा० ॥ ७ ॥ मुह माग्या पासा ढल्या जी, दूधने वूठा मेह ॥ आज कृतारथ हुं यइ जी, आणी घणो धरम सनेह ॥ सा॰ ॥७॥ मोद क चाल जरी करी जी, वहोराव्या उसट भाव ॥ क्र श्र जिमण तणा खावीनें जी, देवकी हर्षित थाय ॥ ्साण् ॥ ९ ॥ जाताने वली पोहोंचाकीयां जी, मुनि वर गया पोल बार॥ थोफीसी वार॥ हुइ जिसेंजी,

चली ख्राव्या होय खणगार ॥ साव ॥ १० ॥ देवकी राणी मन चिंतवे जी, जूखी गया हे ऋणगार ॥ व कीय पुएयाइ हे माहरी जी, भूलें ख्राव्या दुसरी वार ॥ सा० ॥ ११ ॥ सात ब्याठ पग सामी जाइने जी, ्लळी लळी लागेजी पाय ॥ त्र्याज कृतारय हुं यइजी, मुनिवर धस्वा घर पाय ॥ सा० ॥ १२ ॥ मोद्क थाख जरी करी जी, वहोराव्या इसरी वार ॥ क्रश्न जिमण तणा खावीने जी, हैयमे हरष ऋपार ॥ सा० ॥ १३ ॥ जाता नें वली पोहोंचाविया जी, मुनिवर रूप खगा-ध ॥ योमीसी वार हुइ जिसें जी, त्रीजे संघाने त्रा-व्या साध ॥ साव ॥ १४ ॥ देवकी तव राजी हुइ जी, मन मांहे जपनो विचार ॥ श्राहार नवी मख्यो एह ने जी, के जूखें छाव्या छाणगार ॥ सा० ॥ १५ ॥ भू-ख्यानुं तो कारण ए नहीं जी, दीसंता महोटा ऋण-गार ॥ तीसरी वार ए खावीया जी, नहीं ए तो साधु ·**ट्याचार ॥ सा**० ॥ १६ ॥ रूपकला ग्रेण ट्यागला जी, दीसंता सम आकार ॥ पहेलां जो पहने पुनशुं जी, तो नहीं से अम घर आहार ॥ सा॰ ॥ १९ ॥ मोदक थाख जरी करी जी, वहीराव्या तीसरी वा-र ॥ क्रश्न जिमण तणा सावीने जी, देवकी मन

प्राव उदार ॥ सा॰ ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ मुनि प्रत्यें प्रतिलाजिने, निरखी मुनि दीदार ॥ मनमां संशय जपनो, ते सुणजो सुविचार ॥ १ ॥ वात ए अचरज सारखी, मुखशुं कही न जाय ॥ क-ह्या विण स्वाद न नीपजे, विण कह्यं केम रहेवाय ॥ १ ॥ देवकी एम मन चिंतवी, प्रणमी बे कर जोनी ॥ साधु प्रत्यें पूछती हवी, आलस अलगुं होमी ॥३॥

> ॥ ढाख वीजी ॥ ॥ राग गोमी ॥ मृगापुत्रनी देशी ॥

॥ मुनिवर नगरी द्वारिका जी रे, बार जोयणने मान ॥ क्रश्न नेरसर राजीयो जी रे, जेहनी त्रण खंक श्राण ॥ मुनिसर एक कहं श्ररदाश ॥१॥ ए श्रांक-णी ॥ बहोतेर क्रोम घर बाहेर हे जी रे, मांहे हे सा-ह करोम ॥ सोक बहु सुखीया वसे जी रे, मांहे राम कृश्ननी जोम ॥ मुण ॥ १ ॥ खाख क्रोमांरा धणी वसे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ माहरे पुण्य तणे छद-थें जी रे, मुनिवर श्राब्या त्रीजी वार ॥ मुण ॥३॥ व-कीय पुण्याइ हे ताहरी जी रे, एम बोख्या मुनिराय ॥ देवकी मनमां जाणीयुं जी रे, एहने खबर न कांय

॥ मु०॥ ४॥ हुं पूढुं इए कारणे जी रे, साधां न खी धो खाहार ॥ माहरे पुण्य तणे जदय जी रे, मुनिवर च्याच्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुनिवर उत्तर एम कहे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ त्रण संघामाशुं निकल्या जी रे, स्रमें ठए स्राणगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ व सतो मुनिवर एम कहे जी रे, तुं शंका मत आण ॥ ताहरे पहेंखा वहोरी गया जी रे, ते मुनिवर डुजा जा ण ॥ देवकी लोज नहीं ने कांय ॥ ए आंकणी ॥ ७ ॥ देवकी मन अचरिज थयुं जी रे, ए किए मायें जाया रे पूत ॥ रूप सुंदर ऋति शोजता जी रे, मुनिवर का कंमी जूत ॥ मु० ॥ ए॥ श्रामी करीने एम कहे जी रे, सांजलजो मुनिराय ॥ उत्पत्ति तुमारी किहां ऋढे जी रे, ते दिन मुज बताय "मु० ॥ ए॥ कोण नयरीथी नीकव्या जी रे, तुमे वसता कोण प्राम ॥ केहना छो तुमे दीकरा जी रे, कहेजो तेहनुं नाम ॥ मु० ॥ १०॥ नाग रोठना अमे दीकरा जी रे, सुलसा अमारी माय ॥ निद्देखपुरना वासिया जी रे, संयम खीघो ठए ना य ॥ मुण ॥११॥ बत्रीशे रंजा तजी जी रे, बत्रीश ब त्रीश दाय ॥ कुटुंच मेख्यो अमे रोवतो जी रे, विख वि ख करती माय ॥ मु॰ ॥ ११ ॥ सर्वगाया ॥ ३० ॥

।। दोहा ॥

॥ मुनि वचन श्रवणे सुणी, चिंते चीत मजार॥ पहनो परिवार तजी करी, खीधो संयम जार ॥ १॥ हाथ जोमीने वीनवे, सांजलजो मुनिराय॥ किस्या पुःखथी तुमे निकल्या, ते दियो मुज बताय॥ १॥

॥ ढाख त्रीजी ॥

॥ खम खम मुज ऋपराध ॥ ए देशी ॥ ॥ जातो काख न जाणतां सांजल रे बाइ॥ रहे ्तां महोल मजार ॥ दास दासी परिवारद्युं जी, वली बत्रीश बत्रीश नार ॥ सांजल रे बाई, म करीश मन ज्ञाट ॥ ए श्रांकणी ॥ १ ॥ जगवंत नेम पधारिया ॥ सां० ॥ साधुनें परिवार ॥ ऋमें जगवंतने वांदिया जी, वली सुर्णीयो धर्म विचार ॥ सां० ॥ म० ॥१॥ वाणी सुणी वैरागनी ॥ सां० ॥ जाण्यो ऋथिर संसा र ॥ सुख जाण्यां सहु कारमां जी, ऋमें खीधो संयम जार ॥ सां० ॥ म० ॥ ३ ॥ चार महाव्रत त्यादरया ॥ सां० ॥ चारे मेरु समान ॥ ॥ त्यजी संसार संयम लीयो जी, दीधो **उकायनें ऋजयदान ॥ सां**० ॥ म० ॥॥ माता मेली श्रमे जूरती ॥ सां० ॥ तजी बन्नो शे नार ॥ सघला चलवलतां रह्मा जी, में तो डोफ

दीयो संसार ॥ सां० ॥ म० ॥ ५ ॥ बठ बठनें पारणे ॥ सां० ॥ जाव जीव निरधार ॥ ऋंतर हमारेको न हीं जी, बे ए तप तणो विचार ॥ सां० ॥ म० ॥६॥ ऋाज बठनें पारणे ॥ सां० ॥ ऋाव्या नयरी मजार ॥ दोय दोय मुनिवर जूजूआ जी, एम आव्या त्रीजी वार ॥ सां० ॥ म० ॥ ९ ॥ सर्वगाया ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विक्ष विक्ष की घी निति, तुमे महोटा मुनिरा य ॥ घरमां त्रोटो इयो पड्यो, ते दियो मुज बताय ॥१॥ विष्ता मुनिवर बोलिया, तुमे सुणो मोरी मा य ॥ घरमां त्रोटो जे पड्यो, ते देउं तुज बताय ॥१॥

॥ ढास चोथी ॥

॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए दशी ॥
॥ उंचा महोल सोहामणा, रिचया विविध प्रकार
रे माई ॥ तद्वद् रूपें सारखी, परणावी बत्रीशे नार
रे माई ॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए आं
कणी ॥ १ ॥ परणीनें जब घर आवीयां, सासुने लागी
पाय रे माई ॥ तव वहूने रुद्धि घणी जे, आपी ते
मुज माय रे माई ॥ पुण्यण ॥१॥ बत्रीश कोम सोने
या जाणो, बन्नीश रूपेया सार रे माई ॥ बत्रीश बद्ध

नाटकनां टोखां रुद्धि तणो नहीं पार रे माई॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ बत्रीश मुग्रट मुग्रट परवारं, हेम कुंमलनें हा र रे माई ॥ एकावली मुक्तावली जाणो, कनक रयण ं वखी सार रे माई ॥ पुएय० ॥४॥ बत्रीश हार मोती तणा, बत्रीश रतन तणा जाण रे माई ॥ तीसरा चौ सरा हार अने वली, एम कमगने तुमीय जाए रे माई ॥ पुण्यव ॥४॥ बत्रीश सोनाना ढोखीया, बत्री श रूपाना जाण रे माई ॥ बत्रीश सिंहासन सोना ना, इमहिंज कुलश वखाण रे माई ॥ पुण्य० ॥६॥ बन्नीश सोनानी कथरोटी, बन्नीशु रूपानी जाए रे मा ई ॥ बत्रीरो वली तवा सोनाना, तिमहिंज थाल व खाए रे माई ॥ पुएय० ॥ ७ ॥ हय गय रथ दासनें दासी, बत्रीश गोकुल जाण रे माई ॥ बत्रीश सोना रूपाना दीवा, वली आरीसा वलाए रे माई॥ पुएय० ।। बत्रीश पीठ सोना रूपाना, इमहिंज घरेणा ऋ मृद्ध रे माई ॥ पर्गे पमतां सासुर्ये दीधां. एकशो बाणुं बोलरे माई ॥ पुएय० ॥९॥ एम वए बंधवनी मली ना री, एकशो बाणुं जाण रे माई॥ एकशो बाणुंने रुद्धि ऋपाणी, ऋागम वचन प्रमाण रे माई ॥ पुर्य ॥ ॥ ॥ ॥ पणी परे अमे सुख जोगवता, निर्गमता दिन रात रे

माई ॥ त्रोटो तो स्थमने कांइ न हूं तो, ए स्थमे व्य जात रे जाई ॥ पुण्य० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

्रा। वारंवार एम वीनवे, तुमे महोटा मुनिराय ॥ वैराग पाम्या किण विधें, ते दीर्च मुज बताय ॥ १ ॥

॥ ढाख पांचमी ॥

॥ ऋरणिक मुनिवर चाख्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ नेम जिएंद्नी में वाणी सांजली, जाएयो ऋथिर सं-सारो जी ॥ काया मायारे जाणी कारिमी, कारिमो कुटुंच परिवारो जी ॥ १ ॥ मुनिवर जांखे तुं शंका मत करे ॥ ए त्र्यांकणी ॥ खास्त्र चोराशीरे जीवायो-निमां, जमीयो खनंती वारो जी ॥ जन्म मरण क-रीने घणुं फरिसयो, न रही मणा खगारो जी ॥ मुनि० ॥ १ ॥ करम नचावेरे तेम ए नाचीयो, विविध ब नावी वेशो जी ॥ पातक कोधांरे जीवें खति घणां, (पाठांतरे ॥ जन्म मरणे करी बहु वेदन सही,) न वि सुएयो धर्मोपदेशो जी ॥ मुनिष् ॥३॥ एहवी दे श्वना स्वमे सांजली, जाणी सर्व असारो जी ॥ वए बंधव ततस्वण बूकीया, लीधो संयम जारो जी॥ मुनि ॥ ४ ॥ पुण्यनें जोगेरे नरजव पामीया, लेइ

भर्मनी आथो जी॥ ए सुख जाएया रे अमेतो कारि-मां, की भो मुगतिनो सायो जी ॥ मुनि०॥ ५॥ ए हवा वयणां रे मुनिनां सांजली, देवकी करे विचारो जी ॥ बासक वयमां रे संयम ख्राद्रयो, धन्य एहनो अवतारो जी ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ उप्पन कोकी रे माहे-री साहेबी, सामात्रण क्रोम कुमारो जी ॥ दीठा स-घला रे माहारा राज्यमां कोइ नहीं इणे अनुहारो जी ॥ मुनि० ॥ ९॥ इणेइण वयमां रे संयम ऋाद्यों, पाले निरतिचारो जी ॥ धन्य धन्य माता रे ताहरी कुलनें जाया रत अमुखक सारो जी ॥ साधुजीना दुरिसण दीठां राणी देवकी ॥ ए आंकणी ॥ ।।। अंग उपांग रे सघला सुंदरू, सौम्य वदन सुखशी शो जी कोली पातरां लीधां हाथमां, तनु सुकृमाल मुनि शो जी ॥ साधु० ॥ ए ॥ गज जेम चाले रे मुनिवर मलपता, बोले वचन विचारोजो ॥ राजकुमरनी रे दीजें उपमा, जाएे कोइ देव कुमारो जी ॥ साधुण ॥ १० ॥ धन्य धन्य माता रे जेणे ए जनमिया, दर शेष दोखत थाय जी ॥ नाम खीषाथी रे नवनिषि संपजे, पातक दूर पद्माय जो ॥ साधु ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥त्रामी फरिफरि निरिखया, धन्य एहनो अवतारः।।।उए सहोदर सारिखा, नही देखुं एहने ऋनुहार ॥१॥॥॥ ॥ ढाख उठी ॥

॥ धारणी मनावे रे मेघ कुमारनें रे ॥ ए आंकः णी ॥ नयणे निहाले रे राणी देवकी रे, मुनिवर रूप रसाख ॥ स्रक्षण गुणें करीने शोजता रे, वाणी जेह नी विशाल ॥ नयण ॥ १ ॥ जिले घरषी ए पुत्र नी-कख्या रे, शुं रह्यो होसे खार ॥ दीसंता दीसे घणु सो-हामणा रे, नल कुबेर अनुहार ॥ नयण ॥ १ ॥ एणे अनुहारे रे माहरा राजमां रे, अवर न दीसे कोय ॥ जो वे तो एक माहरो कृष्ण वे रे, एम मन अविर ज होय ॥ नयः ॥ ३ ॥ सीधुं सगपण कोइ दीसे नहीं रे, माहरुं हवणां जेम ॥ सूधी खबरज कोइ न वी पर्ने रे, एम किम जाग्यो माहरो प्रेम ॥ नय० ॥ ४॥ श्रावकनो साधुने जपरें रे, होवे हे भरम सने ह ॥ में घणा दीठा सांघु पूरवें रे, ठ शुं जांग्यो केम पूरव नेहु ॥ नयण ॥ ए ॥ जातां दीठां राणी देवकी रे, घणुं यह दिलगीर ॥ हियनुं फाटे तेहनु ऋति घणुं रे. नयणे वितरे नीर ॥ नय० ॥ ६ ॥ स० ॥ ७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ बाखपणे बोख्यो हतो, अइमंतो अणगार ॥ आठ जणीस बाइ देवकी, बीजी नहीं जरत मफार ॥ १ ॥ एहवा पुत्र जनम्या विना, केम थाये आणं द ॥ माहरे संशय ठे घणो, ते जांगे नेम जिणंद ॥श॥ देवकी मन सांसो थयो, जइ पूढुं इणी वार ॥ केवल ज्ञानी मन तणा, संशय जांगण हार ॥ ३ ॥ एम चिंतवी राणी देवकी, वंदण श्री जिनराय ॥ सा मग्री सर्व सजी करी, हरष भरी मन मांय ॥ ४ ॥

॥ ढाख सातमी ॥

हारे लाल शीयल सुरंगा मानवी ॥ ए देशी ॥ हारे लाल चाकर पुरुष तेमाबीने, देवकी राणी बोले वाण रे लाल ॥ किण्पामेव जो देवाणुप्पिया, तुं रय वेगो जातराय रे लाल ॥ नेम वंदणने जायशुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हारे लाल चाकर सुणी हर्षित थयो, गयो जिहां यानशाल रे लाल ॥ तिहां जहनें सज्ज कयों, रथ रूको विसराल रे लाल ॥ नेम० ॥ १ ॥ ॥ हां० ॥ चार उतावली अति घणी, वली उपगरण हलवां जाण रे लाल ॥ बाहरली उवठाण शालमें रथ उन्नो राखी आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ३ ॥ हां०

धोलानें माता घणां, वली ठोटी सींधमीत्रा जाण रे खाख॥ दीसे घणुं ए सोहामणा, एहवा वृषज तुं ऋा ण रे लाख ॥ नम० ॥ ४ हां० ॥ सरिखाने चांदी नही, जोवा सरखी बखदनी जोम रे खाख ॥ चाखे चांख उतावली, जेहनें शिंगे पुंठे नही खोम रे खाख ॥ नेम० ॥५॥ हां० बखद्नें जूलां शाजती, वस्ती सो नानी नाथ रसाख रे खाखा। सोनानी जली शिंगमी, वर्खी गले ते घूघर माल रे लाल ॥नेम॰ ॥६॥इां०॥ खेंचित सोनानी रासमी, वखी सोना पट्टाला जोत्र रे लाल ॥ माथे ते घाल्यो सेहरो, तुं एणीपरें कर उद्यो त रे खाळ ॥नेम०॥०॥हां० वली ते रथ शणगारीयो, ते सूत्रें वे विस्तार रेखाख॥ बखद जुगतशुं जोतरी, लाव्यो **उवहाण शाला म**कार रे लाल ॥ नेमणाणा हां।।। नहाइ घोइ मज्जन करी, वस्ती पहेरया नव नवा वेश रे लाल।। माणिक मोती मुद्रिका, वली घरेणा हार विशेष रे खाख ॥ नेम० ॥ ए ॥ हां० ॥ आर्मवर क री ऋतिघणो, ऋावी बेठा रथ मांय रे खाख ॥ ऋाग ल बांधी शीकरी, रथ बेठी दढ थाय रे लाल॥ नेमण ॥ १० ॥ हां० ॥ साथे ते खीधी साहेखीयां, वली षाद्या ते मध्य बजार रे खाख । यतुर ते बेठो सांध

की, ए यहस्थानो ख्राचार रे खाख ॥ नेमणा११॥ ॥ दोहा ॥

॥नगर मध्ये यइ नीकल्या, साथ बहु परिवार॥ ने मजिणंद जिहां समोसरयी, चाल्या तिण हिज ठार॥१॥ ॥ ढाल श्राठमी ॥

धजाने पताका हो दीठा राणी देवकी रे प्रज ऋतिशयनी वात॥ विनयतो ऋाद्री हो उत्तम साधुनो रे, एतो जगत विख्यात ॥ १ ॥ सांसो निवारो हो प्र जु नेमजी रे ॥ ए त्यांकणी ॥ रथने उपरथी हो हेठे कतरी रे, दासीयोनें परिवार॥ पायनें ऋणु ऋाणे हो राणी देवकी रे, साचवी ऋजिगम सार ॥ सांसो० ॥ २ ॥ देइ प्रदक्तिणा हो वांद्या नेमजी रे, पांचे ऋंग नमाय ॥ दो गुमा दो ढिंचण हो जूतलें थापीनें रे म स्तक जूंइ लगाय ॥ सांसो० ॥ ३ ॥ उए मुनि देखी हो संशय जपनो रे, हुं एम थह रे छदास ॥ सांसो तो निवारण हो कारण आवीया रे, नेम जिलेसर पास ॥ सांसो० ॥ ४ ॥ ग्रण व्यनंता हो प्रजुज तुम तणा रे, जो होये जीजनी अनेक ॥ राग देव बेहुनें हो स्वामी निवारीया रे,सहुमार्थे मन एक ॥ सांसी० ॥ ५॥ घन्य दिवस हो घन्य वेलायमी रे, जेळा तर

ण तारण ऊहाज ॥ मनना मनोरथ हो प्रजुजी मा हरा रे देखी रे, रह्या हो महाराज ॥ सांतोण ॥६॥ ॥ दोहा ॥

॥ देइ प्रदक्षिणा वांदता, बोख्या श्री जिनराय॥ जिण कारण तुमें आवियां, ते सुणजो चित्त साय॥१॥ नेम कहे सुणो देवकी, सांसो उपनो तुज्ज ॥ उए मुनिवर देखीने, तुं पुहुण आवी मुज्ज ॥ १॥ तहित कहे तब देवकी, जोभी दोनुं हाथ॥ हा स्वामी सांसो पड्यो, ते जांगो जगनाथ॥ ३॥ ए उए ताहरा दीकरा तुं शंका म करे कांय॥ उए वोरण जे आवीया, तेहनी तुं वे माय॥ ४॥

॥ ढाख नवमी ॥

॥ रूने रूपरे पुत्र तुमारा राणी देवकी॥ ए आं कणी ॥ तीन संघामे तुम घर मुनिवर, आव्या त्रीजी वार ॥ ते देखीने सांसो पनीयो, उए एकण अनुहार ॥ रूमे० ॥ १ ॥ नागशेठ सुलसा घर विध्या, मकरो शंका लगार ॥ देवकी राणी ताहरा जनम्या, नल कु बेर अनुहार ॥ रूमे० ॥ २ ॥ नही निश्चें सुलसाना जाया, मानो वात अमारी ॥ उदर तमारे ए आवी या, नहीं कोइ मात अनेरी ॥ रूमे० ॥ ३ ॥ किण

विध पुत्र स्थमारा प्रजुजी, जोमी दोनुं हाय ॥ एजा यानुं मरम न जाणु ते जांखो जगनाय ॥ रूके० ॥ ॥ ४ ॥ जीवयसा ताहरी जोजाई, बोली ते ऋण वि मासी ॥ ऋइमंतो रूषि आवंतो देखी, तेहनी कीधी हांसी ॥ रूमे० ॥ ५ ॥ धन जोवनने मदनी माती, बोली ते खोटी रीत ॥ त्रावोनें ब्यइमंता मुनिवर, म-लीने गाइयें गीत ॥ रूमे० ॥ ६ ॥ मुरखमी गीतानी मानी, खबर पने शी थारी॥ देवकी गरन जे सातमो यारो, ते तुज कुलक्तय कारी ॥ रूमे० ॥ ७ ॥ जरा संघनी तुं यइ पुत्री, कंस तणी धणीयाणी ॥ मारुं बोल्युं पांडुं न फरे तें ते वात न जाणी ॥ रूमेण ॥८॥ एहवां वचन सुणीनें काने, कंसने जाइ पुका री ॥ श्राष्ट्रमंते रूषिये वचन कह्यां जे, ते मुजने पुःख कारी ॥ रूने० ॥ ए ॥ तेह वयण सुणीनें कंसें की धो एक उपाय ॥ वसुदेव पासे बोलज लीधो देवकी गर्ज जे थाय ॥ रूमे० ॥ १० ॥ ते वालक तो अमध र वाधे, तव माने वसुदेव॥ कंसराय तिहां राजी हु र्ड, सुख जोगवे नित्य मेव ॥ रूके० ॥ ११ ॥ जे जे गर्ज धरे हे देवकी, तब तिहां ते कंसराय ॥ सात चो की ते उपर मूकी, कपटें खेखे दाय ॥ रूमे० ॥ १२ ॥

दोहा,

॥ तिण काले ने तिण समे, जिह्ने लपुर हे गाम नागरोठ ते तिहां वसे, सुलसाघरणी नाम ॥१॥ धणकण कंचण हे घणो, रूद्धितणो नहीं पार॥ पण मृतवहा ते सही, शोचे हृद्यमकार ॥१॥ तव ते होरु कारणे, हरिणगमेषी देव॥ स्राराधे ते एक मने, निस्र निस्य करती सेव॥३॥

॥ ढाख दशमी ॥

॥ केटले काले सेवा करतां, तूजो देव तिहां त्राय र जाइ ॥ किण कारण तुं मुजने सेवे, शानी छे तूज चाय रे जाइ ॥ १ ॥ पुण्य तणांफल मीठांरे जाणो ॥ ण त्रांकणी ॥ वलती सुलसा एणी परे बोले, जो की दोनी हाथ हो देवा ॥ जिण कारण में तुजने त्रा राष्यो, ते सुणजो तुमे नाथ हो देवा ॥ पुण्य० ॥२॥ धनतो माहरे जरिया जंकारा, तेहनी गरज न कांय हो देवा ॥ मुवा बालक जीवता थाय, ते मुज त्रापो वाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ वलतो देवता एणीप रे बोले, तुं सांजल मोरी वाय रे माइ ॥ मूवा बाल क जीवता होवे, ते मुज शक्ति न कांय रे माइ ॥ पु एय० ॥ ४ ॥ वलती सुलसा एणीपरे बोले, सांजल

मोरा जाय हो देवा ॥ मूवां वालक जो तुजधी न जीवे, तो द्यो अवर उपाय हो देवा ॥ पुण्यव ॥ ५ कोथलीमां जे नाणु घाले, तेटलुं ते निकलाय रे मा इ ॥ पूरव पुण्यना संचजो होवे, तो सवि वातुं थाय रे माई ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥ वलती सुलसा एणो परेवो खे, सांजल तुं चित्त **खाय हो देवा ॥ तु**ठो पण ऋए तूफासरखो, माहारी गरज सरी नही कांयहो देवा ॥ पुष्य० ॥ ७ ॥ वखतो देवता एणी परे वोले, तुमे सुणजो चित्त ठाय रे माइ ॥ ततकाखना जे वालक जनमे, ते तुजनें देउं लाय रे माइ ॥ पुएय० ॥ ० ॥ वसती सुससा एणी परे बोसे, सांजल तुं सुखदाय हो देवा ॥ हुं शुं जाणुं तुं केहनां खावे, ते मुजनें न सुद्धाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ए ॥ कंसराय जे मारण माग्या, देवकी केरा नंद रे माइ ॥ ते तुक्तने हुं आ र्षी देइरा, करी देशां आनंद रे माइ ॥ पुण्यणारणा क्षुलसा सुषीने राजी हुइ, देव गयो निज ठाणरे मा इं श्रवधिज्ञाने विचारी जोवे, श्रवुकंपामन श्राण र्रे माइ ॥ पु० ॥ सर्वगाया ॥ १३१ ॥

॥ दाहा. ॥

॥ देवकीने सुखसा तणा, गर्भ समकाखे कीष।

जनम समय जाणी करी, तुज कुमरां तेणे खीध॥१॥ ते लेइ सुलसाने दीया, कुमर ऋति सुकुमाल॥ मृत क बालक सुलसा तणां, ते देव लीये ततकाल ॥१॥ ते लेइ तुज पासे ठव्या, छए एणी परे जोय॥ निद्रा मूकी गर्भ पालटचा, ते नवी जाए कोय ॥३॥ मृत के बालक कसे खीयां, ते जाखे सहु कोय ॥ उए कुम र महोटा थया, जाणी गणी पंक्तित होय ॥४॥ बत्रि श वित्रश कन्या वस्था, एक लगन सुखकार ॥ पंच विजय सुख जोगवे, दोगंदक छानुहार ॥ ५ वाणी सुणी वैरागची, वर्ष खियो संयम नार ए वयेपुत्र बें ताहरा, तुं शंका म कर खगार ॥६॥ तव शंका सहुए टेली, वांदी नेम जिलंद ॥ साधु समीप ऋष व्या सही, ऋाणी घणो ऋाणंद् ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीरआमी ॥

॥ धन्य धन्य जे मुनिवर ध्याने रम्याजी ॥ए देशी॥
॥ देवकी ते आवी नंदन वांदवा जी, हैयमे उल्ल सि हरिषत थाय रे ॥ निज वाठरुआने देखीकरी रे जेम नव प्रस्ता गाय रे ॥ देव० ॥१॥ ए आंकणी॥ देह प्रफूली तिहां अति घणी जी, रोम रोम उल्लसी तन सार रे ॥ त्रटके तो त्रुटी कश कंचुआ तणी रे

स्तने विज्ञूटी घुधां केरी धार रे देव ।। १॥ वख हैयामांहे तो मावे नहीं रे, जोतां लोचन तृति न थाय रे ॥तन मन रोमांचित हैयमुं उल्लस्युं रे, नज र न पाछा खेंची जाय रे ॥देवण।३॥ एहं सहोदर दीठा सारिखा रे देवकी तो रही सामी निहाख रे नेत्र जरिया आंसुमाथकी रे, जाले त्रूटी मोति केरी माल रे ॥ देवणाधावली नीज श्रंगजने निरखी करी जी उद्घरयो ऋति घणो घणो नेह रे ॥घर जातां प ग साहामा वहें नहीं जी, फरी फरीने वांदे तेह रे u देव०॥ ५ ॥ वांदी जगवंतने जले जावशुं जी,दी **ठा बेठानें** उभाय रे ॥ अधन्य अपुण्य अकृत चिंतवे रे, मोहवराेेेेची पुःख थाय रे ॥ देवें ॥ ६ ॥ घरे ऋा वीने राणी देवकी जी, ऋार्त्तरोंड मन ध्याय रे॥ एहवे अवसरे कृष्णजी आविया रे, माताना वांद वा पाय रे ॥ देव० ॥ ९ सर्वगाया ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णे दूरची देखीया, त्राज खरी दिलगीर ॥ पगे खाग्यो जाप्यो नहीं, नयपो जरे तस नीर ॥१॥ कहो माता किये दुहव्या, केये खोपी तुज कार ॥ वृद्धी वृद्धी कृष्णजी विनवे, पण जत्तर नदीये खगार ॥१॥ हाथ जोकी माधव कहे, सांजलो मारी माय॥ तुजने वात कह्या विना गरज न सरहो कांय ॥३॥

॥ ढाख बारमी॥

॥रहो रहो राजेसरा केसरीया खाख ॥ ए देशी॥ हुं तुज त्रागल सी कहुं कानैया लाल, वितक दुःख नीवातरे ॥ गिरधारी लाल ॥ प्रःखणीनारी हे घ-ग्णी ॥ कानैया लाल ॥ पण डुःखणी नारी मात रे ॥ गि० ॥हुं०॥ ए त्र्यांकर्णो ॥१॥ जनम्या में तुज सारि खा ॥ का[ँ] एकखनालें सातरे ॥ गिणा एके हुखरा व्यो नहीं ॥ का० ॥ गोदलेइ किए मात रे गिँ० ॥ ुहुं०॥१॥ ए ठये वाध्या सुलसा घरे॥ का०॥ हुं नजरे खावी देख रे ॥ गि० ॥ वात कही प्रज नेमजी श का० ॥ जिएमें मीन न मेष रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ३ ढए तो नाग घरे उछर्या । का०॥ सुससानी पूरी आस रे॥ गि०॥ राजकृद्धि बोनी करी का० मोदीका लिधी प्रजुपास रे ॥ गि० ॥ द्वं ४ ॥ ठ ए तोहवे खलगा रह्या ॥ का० एक खाव्यो तु म हारे पास रे ॥ गि० ॥ तुजने में नवी साचव्यो ॥का० माहरे ब्याच्यो तुं उठे मास रे ॥ गि० ॥ ५ सोल वरस ऋलगों रह्यो ॥ का० ॥ तुं पण यमुनानें

तीर रे ॥ गि० ॥ नंद यशोदाने घरे ॥ का० ॥ नाम थरावी खाहीर रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ ॥ ६ ॥ सोछ वर स ठानो वध्यो ॥ का० ॥ पठी उघड्यां व्हारां जा ग्य रे ॥ गि० ॥ जल यमुनामें जाइने ॥ का० ॥ तें नाथ्यो काली नाग रे॥ गि०॥ हुं०॥ ७॥ बालपणा ना बोलमा॥ का॰ में एके न पूरी स्त्राश रे॥ गि॰ त्र्याशा विहूणी हुं रही ॥ का० ॥ जारे मुइ सवा न व मास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ छ ॥ हस्रक न दीघो हा सरो ॥ का० ॥ पासणीय पोढाय रे ॥ गि० ॥ हास्र रुया गावा ताणी ॥ का० ॥ माहरी होंश रही मन मांय रे ॥ गि० ॥ हुं० ए ॥ जगमां मोहटी मोह नी ॥ का० ॥ उदय यह माहरे त्राज रे ॥ गि० ॥ ते जोव जाणे माहरो ॥ का० ॥ के जाणे जिनराय रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ १० ॥ त्र्यांगणीयें न करी घनी ॥ का० ॥ त्र्यांगँखीयें वलगाय रे ॥ गि० ॥ साही सा ही ना मिख्या ॥ का० ॥ हुं जाचण केम कराय रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ ११ ॥ कीधाँ याद आवे नहीं ॥ का० में केइ करम कठोर रे॥ गिण्॥ जवांतरे कीथां हरो ॥ का० ॥ मेंकिहां पाप अघोररे ॥ गि० ॥ हुं० ॥१२॥ के पंत्री माला त्रोमीया ॥ काण ॥ के बाल विद्यो हा कीध रे॥ गि०॥ जीव जयसा कीधी नहीं ॥का० के कूमा खालमें दीध रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ १३ ॥ में जीवाणी ढोलीयां ॥ का० ॥ के में मारी जूं लीख रे ॥ गि० ।। तमके जीव में शेकीया ॥ का॰ बहु जीव की घो संहार रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १४ ॥ कठिन कर्म ते में कीयां ॥ का० ॥ के तोकी सरावर पाल र ॥ गि० ॥ ठां शे विंठी चांपीया ॥ का० ॥ न करीमें शील संजाल रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ १५ ॥ पांतिजेदज में कीया॥ का० ॥ ईषी निंदा शराप रे ॥ गि० ॥ का मनी गर्जज गालीया॥ का • ॥ के में की धां प्रौढां पा परे ॥ गि० ॥ हुं ॥ १६ ॥ ऋणगल नीर में वावरयां ॥ का० ॥ के में पामया ऋंतराय रे ॥ गि० ॥ के सा धुने संतापीया ॥ का० ॥ ते फल त्र्याव्या धाय रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाया ॥ १६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माता वयण श्रवणें सुणी, तव ते यादव राय ॥ हाथ जोनी विनयें करी, बोले मधुरी वाय ॥१॥ पूर्व संबंधी देवता, तेमावुं मोरी माय॥ ताहरा मनो रथ पूरका, करीस हुं एह उपाय ॥ १॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चंडाजलानी देशी ॥ वलता कृष्णजी एम कहे हो, माजी म करो चिंता खगार ॥ जेम तुम नंदन थायशे हो, तिम हूं करीश विचार ॥ तिम हूं करीश वि चार रे याइ, मनमें चिंता म करो कांइ॥ देजो मुकने मलीय वधाइ, जब जनमे माहारो न्हानो जाइ॥जीउ माताजी जीर्र ॥१॥ माता चरण नमी करी हो, खाव्यो पौषध शाल ॥ हरिणिगमेषी देवता हो, मन समयोंत तकाल ॥ मन समर्यो ततकाल मुरारी, अठम जक्तज चित्तमें धारी ॥ देवता आवी कहें तिए वारी, एहवो क ष्ट किर्न केम जारी॥जीर्न कानाजी जीर्न ॥१॥ देव कहे क्रुष्णजी प्रते हो, केम तेमाव्यो मुज ॥ कारज कहो मुजने सही हो, जे करवुं होये तुज ॥ जे करवुं होये तुज काम भारी, खमे बउं तुजने जपगारी॥ खादेश यो अमने सुखकारी, काम कहोने ते शुजसारी ॥ जीर्च कानाजी जीर्च ॥ ३ ॥ देव प्रत्ये कृष्णजी कहे हो, सुणो तुम चित्त धार ॥ लघु वांधव माग्रं सही हो, कृपा करा हरिणगमेषी सार ॥ कृपा करो हरिण गमेंपी सारी, होने बालक खीखाकारी सुख पामे ज्युं मात स्प्रमारी, जाद्व कुलमांहे जयजय कारी

जीर्ज देवाजी जीर्ज ॥४॥ देवकी नंदन त्यातमो हो, जेम थाये तेम जेम ॥ इण कारण तुम समरियो हो ठर नहीं कोइ प्रेम ॥ ठर नहीं कोइ प्रेम हमारे,बा सकनी लीला चित्तमें भारे॥ एह स्त्रीने होये जग त्राधारे, पुत्रने देखे माता जिवारे ॥ जीस्रो देवाजी जीख्रो ॥५॥ ख्रवधिज्ञानें प्रयुंजीनें हो, देव कहे तेणी वार ॥ देव खोकची चवी करी हो, देवकी कुखें अ वतार ॥ देवकी कुखे ख्रवतारज थाशे, सवा नवमा स जेवारें याहो ॥ पुत्र जनम्याथी सुख पाहो दिस ण जेहनो सहुने सुहारो ॥ जीखो कानाजी जीखो ॥६॥ जरजोवन वय पामशे हो, पूत्र होशे महा महोटो ॥ पण दीक्षा खेरो सही हो, वचन नहीं स्त्रम खोटो॥ वचन ऋमारो खोटो न थाइ, मातानें ऋावी दीध व भाइ ॥ माता हीयमे हर्ष न मावे, कृष्णजी मनमां श्चानंद पावे ॥ जीत्र्यो माताजी जीत्र्यो ॥ ९ ॥ वसता कृष्णजी एम कहे हो, सांजलजो मोरी माइ ॥ देवरूप कुंवर होशे हो, देजो मुज वधाइ॥ देजो मुज वधाइरे माता, पुत्र होशे, तुम जगत विख्याता॥ मनमां राखो तमें सुखराता, माताजी थारो मुज खंघु भ्राता ॥ जी श्रो माताजी जीश्रो ॥७॥ वयण सुणी कृष्णजी तणां

हों, जपन्यो मन आनंद ॥ वखती देवकी एम कहे हो, तुं तो मुजकुल चंद ॥ तुंतो मुजकुलचंद रे भाइ माहरी चिंता दूर गमाइ ॥ कृष्णे संतोषी निज माइ, पत्नी सुख विलसे त्यावासे त्याइ॥जीओ कानाजीजी श्रो ॥ ए ॥ एणे अवसर देवथी चनी हो, देवकी उदर उपन्न ॥ सिंह सुपन देखी करी हो मनमां हुइ सुप्रसन्न ॥ मनमां हुइ सुप्रसन्न सोजागी जाइपी युने पूडवा लागी ॥ पीयु कहे सुण तुं वमजागी, पूत्र होशे तुम गुणनो रागी॥ जीखो माताजी जीखो॥१०॥ तेइ वचन देवकी सुणी हो सुखमां गमावे काल सवा नवमासे जनमियो हो, कुंत्र्यर स्रति सुकुमाल ॥ कुंद्यर ऋति सुकुमाल देखीने, नाम दीयो गज सुकु माख हरषीने ॥ इरष पामे देवकी निरखीने रीजे सह कोइ गुण परविनि॥ जीखो कुंखरजी जीखो ॥१९॥ हवें माता निज पुत्रशुं हो, रमे रमाने वाल ॥ मनना मनोरथ पूरवे हो, हाथो हाथ विसाख ॥ हाथो हा थ विसाल रे बाइ, रमाने माता हरख उमाइ॥ हा **रुरीमा हुरुरीमा गावे, दिन गमावे राजी थावे ॥ जी** ऋो कूंबरजी जीओ॥ १२॥ गजसुकुमाख महोटो थ यो हो, बहु उडरंगे जणाय ॥ रूप विचक्तण जाणी नें हो, सोमलघर मनाय ॥ सोमलघर विवाह मना यो, देवकी माता श्राणंद पायो ॥ दिन दिन वाधे ते ज सवायो, जातो न जाणेकालगमायो ॥ जीओ कुं श्राप्ती जीस्रो ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ १८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणें अवसर श्रीनेमजिन, करता उम्र विहार॥ जिनक जीन प्रतिबोधता, बोडनता संसार ॥ १ ॥ ए क दिन नेम पधारिया, सोरठ देश उदार ॥ द्वारिका नयरी आनिया, नंदन ननह मकार ॥२॥ आङ्का लेइ ननपालनी, उत्तरिया तिणे ठार ॥ संयम तपें करि जानता, बहु गुण तणा जंमार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ राणपुरो रिल्ळामणो रेखोल ॥ ए देशी।।
॥ नेमजिणंद समोसर्या रे ॥ लाल, निलोंजी नि
मीय रे ॥ जिनकजन ॥ दरशनदीने तेहनुं रे लाल,
जव जवनां पुःख जाय रे ॥ ज० ॥ १॥ नेम जिणंद स
मोसर्या रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ सहस अढारे साधु
जी रे लाल, साधवी चालीश हजार रे ॥ ज०॥ निज
आणाने मनावता रे लाल, शासनना शिरदार रे ॥ ज०॥
॥ ने० ॥ २ ॥ चोत्रीश अतिशयें विराजता रे लाल,

पांत्रीश वाणी सार रे ॥ भ० शुभ बक्षण सोहाम ्णां रे लाल, ब्राठने एक हजार रे ॥ ज० ॥ने०॥३॥ प्रभु दर्शन देखी करी रे लाल, हरषे वांद्या पाय रे॥ जि ॥ वनपासक उतावसो रे सास, कृष्णपासें ते जा य रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ४ ॥ वनपालक आवी करी रे खाख, जोकी दोनुं हाथ रे ॥ त्र० ॥कृष्णनरेसरने क ंहे रे लाल, सांजलजो नरनाथ रे॥ सुग्रणिजन॥ ने० 💵 य ॥ दरिसण जेहेनुं इच्छता रे खांख, करता मनमें चाह रे ॥ ज० ॥ पीयरीया ठकायना रे खाख, श्रीने मि जिनराय रे ॥ ज० ॥ने०॥६॥ नाम गोत्र सुणी रीजता रे लाल, धरता मन अभिलाष रे ॥ ्ते श्री नेम पधारिया रे लाल, वनपाले एम दाख रे ॥ जि ॥ ने ॥ ७ ॥ दीजीये देव वधामणी रेखाल, पा मी मन त्र्याणंद्रे ।। जा ॥ तेह वयण सुणी करी रे खाख, तव हरख्या गोविंद रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ८ ॥ ⁻ट्यासनथी तव जठीयो रे खाख, सात आठ पग सामो जाय रे ॥ ज० ॥ प्रभुने की घी वंदना रेखाख, पढीबे हो निज हाय रे॥ जल नेल ॥ ९॥ कृष्ण दीधी वधामणी रे खाख, बोले मधुरी वाण रे ॥सुगुणिज न ॥ सोनैया दीधा सामटारे लाख, साढी बारे खाल

रे सु० ॥ने० ॥१०॥ वनपालकनें विदा करी रे ला ल पठी चाकरनें तेमाय रे ॥मु०॥ कौमुदी जेर वजा मीनें रे लाल, सांजली सहु सज्ज्ञ थाय रे ॥मु०॥ने॰ ॥११॥ उठो रे लोको सितावशुं रे लाल, रखे अवे ला थाय रे ॥मु०॥ एक घनी दर्शन विना रे लाल क्षण लाखीणो जाय रे ॥ मु०॥ ने० ॥ १२ ॥ कोइ कहे दिरसण देखशुं रे लाल, कोइ कहे मुणशुं वाण रे ॥ मु०॥ कोइ कहे संशय ठेदस्यां रे लाल, कोइ कृत्हल जाण रे ॥ मु०॥ ने०॥ १३ ॥ स० ॥१९३॥ ॥ दोहा ॥

॥ एम विविध परें चिंतवी, बहु नारीना दृंद ॥ स्नान करी शिएगारीया, मनमां धरी ऋाएंद ॥ १॥ नगर मध्यें थइ निकल्या, चढी हय रथ गयंद॥पंच ऋभिगम साचवी, वांद्या नेमजिएंद ॥ २॥

॥ ढाख पंद्रमी ॥

श्रीसुपास जिनराज, तुं त्रिभुवने सिरताज ॥ए देशी॥
॥सोरठ देश मजार, द्वारिका नगरी सार, त्रा
ज हो वसुदेव रे राजा राज्य कर तिहां जी ॥१॥
जाइ दशे दसार, बखजद कान कुमार, त्राज हो दीप
रे सोहागण राणी देवकी जी ॥ २॥ तसु खबु पुत्र

रसाल, नामे गजसुकुमास, आज हो मात पिताने वा सहो कुंवर प्राणयी जी ॥३॥सुणी स्राव्या नेमजिएंद साथें सुरनर बृंद, आज हो सेव्यां रे सुखदायक स्वा मी समोसस्या जी ॥४॥ जादव बहु परिवार, मन धरी हर्ष खपार, खाज हो कृष्णादिक सह उठरंगें जरवा जी ॥५॥ करी बहु अति माम, वंदन नेमी स्वाम, त्याज हो गजसुकुमाल ने साथें लेइनें जी ॥६॥ विधिशुं वांदी जिनपाय, तव ते दोनुं जाय, ऋाजहो धर्म कथा कही बहु विस्तारद्युं जी ॥८॥ देशना सु गी तेणी वार, बुज्यां सह नर नार, आज हो वांदी रे व्रत महीनें निज निज घर गया जी ॥९॥ वाणी सुणी ऋष्णराय,वांदी जिनवर पाय, आज हो जेम आव्या तेम निज नगरें गयाजी ॥१०॥ स० ॥२०८॥

॥ दोहा ॥

जिन वाणी श्रवणे सुणी, बूज्यो गजसुकुमाल भ घरे आवी माता जणी, बोले वचन रसाख ॥१॥

ा ढाल सोलमी ॥

॥नदी यमुनाके तीर उमे दोय पंत्रीया ॥ ए दे

र्शा ॥ वाणी सुणी जिनराज तणी काने पनी ॥रेमा मी खंतर हेयमानी खांख माहेरी उघमी॥वलती मा ता बोले हुं वारी ताहेरी ॥ रेजाया ॥सुणी ए प्रभुजी नी वाणि युण्याइ पूरी ताहरी ॥१॥ कही श्री जिन राज ते साची में सईही॥ र माइ॥ खागी मीठीजेम साकर पूधने दही ॥दी जें अनुमति मुज संयम लेशुं सही, न करो ब्याज्ञानी ढीज पुत्रें ऐसी कही ॥२॥ त्र्याज सन्नामां जैनधर्म बलाण्यो जिनवरें, मुजने रु च्यों व तेह वेह पुःखनो करे॥ ए संसार असार के बार समी लख्यों, जन्म मरण पुःखकरण जल ए जालें धरुयो ॥३॥ श्री जिनमारग ठारण कार ण जेलख्यो, ए विना अवर न कोइ सकल शास्त्र ल रुयो॥ कारागार समान आगार विहार हे,तजवो कों इकवार आखर पहेलां पढे ॥४॥ एक इहां अणगा र पणुं सुखकार हे, माता यो अनुमति वात न को करवी अठे ॥ नंदन वचन सुणो एम जननी जलफ ली, हित वाणी पुःख खाणी जावे यह गलगली ॥५॥ वोणी खपूरव वात पुत्रनी सांजली, घणुं मू जीगत थाय धसकी घरणी ढली॥जांगी हाथांरी चू न माथे केश वीखर्या, वजी हुन्त्रो ओठणो दूर धस

की धराषी पडचा ॥६॥ मोह तणे वश आय सूरत जांखी चइ, शीतल वाय सचेत थइ बेठी जइ ॥ कुं श्चरनां मुख साहमुं रहीने जोवती, मोह तेे वश बोसे माता रोवती ॥ ७ ॥ तुज मुख माहेची वच्छमा णी ए केम पनी, माहरे वे तुजवपर आशा अति व मी ॥ हूं मूखयी तुज नाम न मेळुं अध घमो, रे जा या तुं जीवन अंघा लाकमी ॥ ८ ॥ चारित्र छे वत्स पुकर असी बारा सही, सुरिगिति तोख वो वांह के तर वो जलदाहि॥ उपामी लोह भार के गिरि चडवो व ही, तुं सुंदर सुकुमाल पाल केम थिर रही ॥ ९॥ दोष बेंतालीस टाली करवी गोचरी, भमवुं जमरा जे म चिंतामाने लोचरी ॥ कनक कचोठा ठोम लणी वत्स काचली, जाव जीव लगे वाट न जोवी पाछली ॥ १० ॥ जे इह लोके ऋासंस के परखोके परमुहा कायरने कुपुरुषने ए सविदुछहा ॥धीर वीर गंभीरने शी डुकर कहा, मान करी ए वात बीहावो शुं मुहा ॥ ११ ॥ परीसह केरी फोज खावी जब लागशे, संय म नगर सभाव कोट तब भांगशे ॥ तहारे वह तुज जोर कांइनहीं फावरो, पुत्र अमारुं ताम वचन मन व्यावशे ॥ १२॥ कोटे शुज मनोरथ सुभट बेसामुद्यं,

सत्य रूप पनकोट तेमांहे समारशुं ॥ समता नालें ज्ञा न गोला जरी मारशुं, पिसह केरी फोज आवंती वा रशुं ॥ १३ ॥ राग द्वेष दोय चोर जोरावर दूटरो, पु एय खजानो माल अमूलक छूटरो ॥ कांत्युं पींज्युं व त्स कपासते थायरो, मन केरी मनमांहे के होंस स मायरो ॥ १४ ॥ पहेरी उत्साह सन्नाह पराक्रम धनु ष यही, थिरसा पण्छ वैराग के वाण पुंखी करी ॥ साहमांपहली मुठें हणशूं ते सही, वीरजननी तुज नाम कहावीरा ते वही ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥२२४॥

॥ दोहा ॥

॥ वलती माता इम कहे, जोगवो जोग संसार॥ भुक्त जोगी हूत्र्या पढी, क्षेजो संयम जार ॥ १॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ माकण मूडाखो ॥ ए देशी ॥ सांजल रे मारी माता, एतो विषयारस इ:खदाता हे ॥ निज मन सम जाय खो ॥ मन समजाय खो मोरी माता, एतो जनम मरण इ:ख दाता हे ॥ निज० ॥ १ ॥ जेणे न कियो धर्म खगार, तेतो पहोता नरक मजार हे ॥ निज०॥ जे के कीधां एणे संसार, ते तेहनी आवे खार हे॥ निज∘॥२॥ इण भव पीका पावे, तेतो मृख कोय न मि टावे हे ॥ नि० ॥ कुटुंब मिली सह स्रावे, पण पुःख कोय न वेहेंचावे हे ॥ निजण ॥ ३ ॥ तो परजव कु ण त्र्यासी, जीव कीधां पाप पुएष वासी हे ॥नी०॥ ते एकलडो डुल पासी, बीजो खामो कोइ न घासी है ॥ निज॰ ॥ ४ ॥ इण जनवी हूं डरियो, खख जो राशीमां फरियो हे ॥ नि०॥ बाख मरणे हूं मरियो, वार खनंती अवतरियो हे ॥ निज॰ ५ ॥ रमणी रंग पतंग, नही पाले त्रोत अमंग हे ॥नि०॥ रमणी करावे बहु जंग, तेहशुं कुण करे संग हे ॥ निजण ।। ६ ॥ एमां जे प्राणी माच्या, ते तो मूरख कहीये जाचा हे ॥ नि० ॥ इण संसाररो जगको कूको, मेंतो जिन मारग पायो रूको हे ॥ निज०॥९॥ हुं राचुं न हीं एमां जंडो, जेम पांजरामाहे सूमी हे ॥ निज० ॥८॥ माताजी अनुमति दीजें, घेमी एकनी ढील न कीजे हे ॥ नि० ॥ माताजी मया करीजे, जेम मुज कारज सीजे हे ॥ निज०॥ ए॥ श्री नेमीसर पारा, हुंतो पुरीश मननी आश है।। निणा मायें जा एयो क्रुंखर उदास, करेवली उत्तरतासहे।। नि॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ धनादिक भहु मंत्रवी, उत्तर परुत्तर बहु कीध ॥ ते विस्तार तो वे घणो, ख्रांतगड मांहे प्रसिद्ध॥१॥ वस्ति कहे राणी देवकी, रे पुत्र तुं लघुवेश ॥ संय म प्रक्तर वे सही, तेतुं केम पालेस ॥ १॥

॥ ढाल ऋहारमी ॥

॥ लावर दे मात महार ॥ ए देशी ॥ वर्री एम कहे कुमार, त्र्याणी प्रेम त्र्यपार, त्र्याजहो अमीयरे स माणी वाणी सांभली जी ॥ १॥ उपनो मन वैराग, संयम उपर राग, त्राजहो धन सज्जन सह दीसे का रिमो जी ॥ २ ॥ में जाखो सर्व असार, एकज धर्म आधार, आजहो वेकरजोडी मातानें एम वीनवे जी ॥ ३॥ माता पिताना पाय, प्रणमें सुत सुखदाय, आजहो अनुमति दीजे माता मुज जणी जी ॥श॥ सुण वत्सतुं लघुवेश हूं केम देर्च उपदेश, आजहो सुत पाले मावडी एकेली किम रहे जी ॥ ५ ॥वच न अपुरव एह, श्रवणे सुएया गहगेह, खाजहो जल जर नयणे बोले राणी देवकी जी ॥ ६॥ ते पुत्र न पासे दिरक, पासवी सुग्रह शीख, आज हो घर घरनी

जिक्षानमंता दोहिली जी ॥ ७ ॥जावजीव निराधार चालवुं खांना धार, आजहो वावोश परिसह वलवंत जीतवा जी ॥ ८ ॥ शाख दाख घृत गोल, कोण देशे तंबोल, आजहो केशरीये वाघेरे कस कोण बांधशे जी ॥ ए ॥ नित्य नवा वस्त्र सिणगार, करवा मनोहर आहार ब्याजहों ब्यरस निरस ब्याहारनें मेलां काप डां जी०॥ १०॥ सहेज बिडाइ फूल सार, तोहे ना वे निंद खगार, आज हो माम संघारे सुबुं दिन दिन दोहिसुं जी ॥ ११ ॥ पीवुं उनुनीर,सेहेवुं पुःख शरी र आज हो भुजायें करीनें सागर तरवो दोहिलो जी ा १२ ॥ बावल देवी बाथ, लोह चला लेइ हाथ, च्याज हो मीण तणे र दांते चावण दोहिलो जी 🔊 १३॥ वलतो कुमर अवीह, वचन कहे जेम सिं इ, आज हो कायरनुं हीयडुंरे कंपे अति घणुं जी ॥ १४ ॥ हुंतो सिंह जैम श्रूर, पाछुं संयम पुर, आठ हो चारित्रपासी शिवरमणी वहं जी ॥ १५ ॥ इंद च द नरिंद, दाणव देव मुणिंद, आज हो अथिर संसा रमें सबस केइ आयडे जी ॥ १६ ॥ तीर्थिकर गणधा र, वासुदेव चकी सार, आज हो एहवा वीरपणा ची रकोई निवरमा जी॥ १७॥ तो अवरां कुण वात

एम ख्रवधारो मात, खाज हो मोह निवारण थार्जा मानी मुज तणो जी ॥१८॥ तो शुं ऋखंत स्नेह, ए क् जीव दोय देह, आज हा तुज विहुणी माता केम रहे जी ॥१५॥ तुं मुज जीवन प्राण, कीकी काज ल समान, त्राज हो उंबर फूल परें सुणतां दोहिलो जी ॥ २० ॥ इष्ट कंत पीयु मोय, तुं मुज विसामो होय, आज हो मुज मन वाल्हो ऋति घणो तुं सही जी ॥ २१ ॥ तुं पुत्र नाहनो बाल, केलि गरज सुकु माल खाज हो जोग योग्य हे खनस्था ताहरी जी ॥ १२ ॥ रूप कला गुण पात्र, निरुपम निरमल गा त्र, त्र्याज हो सोमलरी बेटी परणो पदमणी जी ॥२३॥ मीठी प्रजु अमृत वाण, में कीधी मात प्र माण, त्याज हो मायाशुं मन मोरो उतरी गयो जी ॥ २४ ॥ जाएयो मे ऋथिर संसार, लेशुं संयम जार, खाज हो मात मया करी अनुमति मुजने आपजो जी ॥१४॥ पर्वे लेजो संयम जार, खाँदरजो खाचा र आज हो कन्या विचक्षण परणो खामकी जी ॥ १६ ॥ पुत्र मुज मन हुंति चाख, जाणुं रमामीश बास, आज हो तुज उपर मुज आशा वे घणी जी ॥ २९ ॥ मात पितानें भाय, घणुंक मोह लपटाय,

श्चाज हो कहुं रे न माने कुंत्र्यर सुखक्षणो जी ॥२०॥ घणुं रे थइ दिसगीर, नयणे विजूटे नीर आज हो विलाप करे हे वसुदेव देवकी जी ॥ २९ ॥ हलधर माधव जाय, ततक्षण विगर बुखाय, आज हो मधुर वचनशुं माधव एम कहे जी०॥ ३०॥ टाखुं जाइ ता हरुं पुःख, वससो मनोहर सुख, आज हो वायवि ना पुरुष निवारं ताहरं जी ॥ ३१ ॥ जनम मरण वारों मोय, सुख मानी रहुं तोय, त्याज हो दुःख ह रण सुख करण तुमें वांधवा जी ॥ ३१ ॥ देव दाण व इंडराय, ए केणेंही न मिटाय, आज हो कर्म क्षय चकी सहुए टखे जी ॥ ३३ ॥ क्षय करवा निज कर्म, लेशुं संयम धर्म, स्राज हो स्रमुमतिदीने वंधव मुज प्राणी जी ॥ ३४ ॥ कृष्ण कहे एम वाय, सुण सुण मोरा जाय, आज हो राजे बेसाडुं द्वारामितनुं ए स ही जी ॥३५॥ वरतावुं ताहरी त्र्याण, करुं हुं हुकम प्रमाण, त्राज हो स्राणा वरतावुं सघले ताहरी जी ॥ ३६ ॥ मीन रह्या तेणी वार, कृष्ण हरख्या निर भार, आज हो सङ्जन परिवार सहु राजी हुवा जी ॥ ३७ ॥ करवा ते कृष्ण काज, खेइ वेसाडया राज, श्चाज हो हुकम **च**खावे गज सुकुमालनो जी ॥ ३८ ॥

कृष्ण कहे एम वाण, राय हुकम प्रमाण, आज हो हाथ जोडीने केशव एम कहें जी ॥ ३० ॥ वरतावो माहरी आण, करो हुकम परिमाण, आज हो दीक्षा महोत्सवरी खब तइँखारी करो जी ॥४०॥ स्वजंका र खोखाय, तीन खाख नाणुं कढाय, आज हो वेगे रे मंगावो रजोहरण पातरा जी ॥ ४१ ॥ नारायण तेमहिज कीध, खाज्ञा सेवकनें दीध, खाज हो मग्री सरवे संयमनी सज्ज करे जी ॥ ४२ ॥ कुंअरनें निश्चल जाण, माता अमृत वाण, त्याज हो त्याशीष दीये वे राणी देवकी जी ॥ ४३ ॥ धन्य दाहाको मा हरो ञ्राज, सफल फल्यां मुज काज, ञ्राज हो चरण ना शिष्य याशुं श्रीनेमनायनां जी ॥ ४९ ॥ वाजांने नीशाण, बेसारी शिविका आण, आज हो आणीनें सोंप्या वे श्रीजगनाथनें जी ॥ ४५ ॥ रहेती एहनें तंत, हुंतो इष्ट्रनें कंत, आज हो तुमनें रे सींपुं बुं प्रभु जी शिष्य जणी जी ॥४६॥ प्रभुजीयें दीका दीय कुंत्र्यर नुं कारज सीध, आज हो माता विता रे कुंअर प्रत्येक हे जी ॥४७॥ धरजो मन शुजध्यान, दिन दिन चमते वान, खाज हो सिंह तणी परें संयम पालजो जी ॥४८॥ तव ते देवकी नार कहे प्रभुने वारवार, आ ज हो तप करतां एहने तमें वारजो जी ॥४५॥ ए णे ए जवह मजार, दुःख निव दीठुं लगार, आज हो देव तणा परें सुखएणे जोगव्यां जी ॥५०॥ भु रूयां तरस्यानी चाह, करजो एहनी संजाल, आज हो जालवजो एहनें रूनीपरें घणुं जो ॥५१॥ माहरी हती पोथीनें आथ, ते दीधी तुम हाथ आज हो जेम जाणो तेम हवे तमे राखजो जी ॥५१॥ स०॥ २०५॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही पाठा वह्या, देवकीने परिवार ॥ पठी कृष्ण पण वांदीने, पहोता नगर मकार ॥ १ ॥ प्रभुजीयें दीक्षा देइ, शीखव्यो सर्व आचार ॥ प्रभु पासें विनयें करी, जएयो खंग इग्यार ॥ २ ॥ उर्या स मिति शोजता, थया गज अणगार ॥ ठकाय तणी रक्षा करे पाले पंचाचार ॥३॥

रक्षा कर पाल पंचाबार गरा।

॥ ढाल र्जगणीशमी ॥

॥ सोरठ देश सोहामणो ॥ ए देशी ॥

दीक्षा दिन प्रभु वांदीने, मशाणे संध्याकाल रे
॥ पिनमा ठाइ कालस्सम्म रह्यां तिहां सोमल आव्यो
चाल रे ॥ सोजामी शुकल ध्यानें चढयो॥ए ख्रांकणी
॥१॥ मुनि देली वेर ल्लस्यो, थयो कोपांतर काल रे

विण ख्रवगुण मुज पुत्रीनो, जनम खोयो तें ख्राख रे ॥सो०॥श॥ एम बहु रीसे परजली बांधी माटीनी पा ल रे ॥ केसु वरणा माथे धस्वा,धगधगता खेर ऋंगा र रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ तापें तुंबकी खदखदे, फमफम फूटे हाम रे ॥ चाम चमचमे नसा तड तमे, छोही वहे निह्याम रे ॥ सो० ॥ ४ ॥ धीर वीर मुनिष्यान चड्या, करें निज धर्म संजाल रे॥ जे दाजे ते माह रुं नहीं, पण नाप्यो मने करी काल रे ॥ सो० ॥ ८॥ अनादि कालनो जीवमो, कस्बो प्रवृतिनो संग रे ॥ पुद्गल रागे रीजीर्ड, नव नवें ते रंग रे ॥सो० ॥६॥ कुमति सेनानें वश पड्यो, जीव रह्यो तुं संसार रे ॥ श्रमादि कालनो भूली गयो, हवे करो निज विचार रें ॥ सो ॥ ७ ॥ सुमति निवृति श्रंगी करी, टाली अनादि जपाधि रे ॥ कमा नीरे आतम सिंचीयो, श्राणी परम समाधी रे ॥ सो ॥ ७ ॥ श्रपूरव कर ण गुक्रध्याननो, त्रीजों पायो क्तपक श्रेण रे ॥ परम शुक्क बेदया वरी, तो शुं वार्क्षे अग्नि तृण क्षीण रे ॥सो०॥९॥ घाति कर्म खपानियां, टाख्यो कर्म नि कार रे। करम टाखी केवल लही, पहोता मुक्ति म कार रे ॥ सो० ॥ २० ॥ केवल महोत्सव सुरें कस्बो.

पठी पूठयो देवकी मोरार रे॥ सुर वृत्तांत सबे कह्यो, ते सूत्रें वे विस्तार रे॥ सो०॥ ११॥ सात सहोद र मुक्ति गया, वांदी नेम जिएंद रे॥ नित्य एहवा मुनि संजारिय, ब्रहियें परमानंद्रे रे ॥ सो० ॥ १२ ॥ भरम दलाली कृष्णें करी, खरच्युं प्रव्य खपारे रे ॥ चार तीर्थनें साह्य करी वली वधामणी दीधी सार रे सो ॥ १३॥ तिले तीर्थंकर गोत्र बांधीयुं, सु णजो सहुनर नार रे॥ त्रीजीयी निकली अमम ना में, जिन होरो जग ख्राधार रे ॥ सो० ॥ ॥१४॥ कर म खपावी केवल लही, पहेंचिश मुक्ति मजार रे ॥ एहवुं जाणी जे धर्म आदरे, ते लेशे जवजल पार रे सो० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०७ ॥ समाप्त ॥ इती श्रीदेवकीजीना ह पुत्रनो रास समास ॥

॥ अथ मूर्खशतक प्रारंभः॥

मूर्व जनमां आ नीचे लखेलां एकसो अपलक्षण मां-हेला घणांक अपलक्षण दीठामां आवे हे, तेनां नाम-

१ उद्यम् करवा समर्थ् इतां उद्यम् न करे.

२ विद्वानोनी सन्तामां पोतानी प्रशंसा करे

३ वेश्याना वचन जपर विश्वास राखे.

४ पांखकी कृत त्रामंबर देखी प्रतीत त्राणे.

५ जूगार रमी धन पेदा करवानी ख्राशा राखे.

६ कर्षणयी धन पेदा करवानो संदेहची आणे.

७ निर्बुद्धि वतां महोटा कार्य करवानी वांवा करे.

ण विषक छतां एकांते कोइ इंद्मां रिसक होय.

ए लहेणुं करी ऋणखपती वस्तु वेचाती लीये.

१० पोते वृद्ध छतां द्श वर्षनी कन्या परणे.

११ ऋण सांजख्या प्रंथोनुं व्याख्यान करे.

१२ जगतमां जे प्रत्यक्त वस्तु होय तेने छानी ढांके.

१३ पोतानी स्त्री चपल छतां इर्ष्या राखे.

१४ समर्थ वैरी छतां तेनाची शंकाय नहीं.

१५ धन आपीने पठी पश्चाताप करे.

१६ महोटा कवी श्वरनी साथे विवाद करे.

१७ अप्रस्तावें परवर्जुं बोखे.

१० बोखवाने प्रस्तावें मीन धारण करे.

१ए लाज थवाने अवसरें कखह करवा बेसे.

२० जोजन वेसाये रोष करे.

२१ घणो साज थतो देखी धनने विखेरी मुके.

२२ ज्यां सामान्य भाषा बोखवी जोइयें, तिहां कि ए संस्कृत जेवी जाषा बोखे.

२३ पुत्राधीन पणायें ऋने धने करी द्यामणो थाय. २४ स्त्रीना पीयर पद्मवाला पासे प्रार्थना करे. १५ स्त्रीने हास्यें रीसाणी चको विवाह करे. २६ पुत्र ऊपर रीसाणो थको तेने बंधनमां घाले. २९ कामुकनी स्पर्द्वायें करी दातार थाय. २० देणदारनी प्रशंसाथी ऋहंकार करे. २ए बुद्धिना गर्वे करीने हितनां वचन न सांजले.. ३० कुखने मदे करी कोइनी चाकरी न करे, ३१ कामी थको घणुं प्रुर्क्षेत्र एवं द्रव्य दीये. ३२ ड्रव्य वगेरे जधारे देइने पाढुं मागे नही. ३३ लोजी राजानी पासेंथी लाजनी वांता करे. ३४ प्रष्ट राजा छतां तेनी पासे न्यायनी इच्छा करे. ३५ त्राप मतलबी साथें स्नेहनी त्राशा राखे. ३६ इष्ट मित्र वते पोतें निर्जयपणें रहे. ३७ कृतघनो उपकार करवा माटे प्रयास करे. ३८ नीरस माणसने ऋथें पोताना गुण वेचे. ३९ पोताने समाधि छतां वैद्य ख्रीषध करे.

iii.

४० पोते रोगी थको क्रपण्य करवा जाय. **४१ लोजे करी पोताना स्वजननो त्याग** करे. ४२ वचनेकरी पोताना मित्रने दुहवे. . ४३ खाजनी वेखाये खाळस करे. ४४ इन्द्रिवंत उतां त्रिय साथे कलह करे. ४५ ज्योतिषि निमित्तियाना कहेवाथी राज्यने वांबे. ४६ मूर्व साथे एकांत करवामां आदर कर. ४७ दुर्बलजनने पीमवा शूरवीर थाय. ४८ प्रत्यक्त दोषवाली स्त्री साथे राचे रतिसुख करे. थए गुणनो अभ्यास करवामां क्राणेक रागी न होय. २० द्रव्यादि संचय करीने पारके हाथे व्यय करावे. **५१ राजानी प्रशंसा करवा मौन धारण करे.** १२ खोकोनी आगल राजादिकनी निंदा करे. ५३ दुःख पने थके दयामणो थाय. ५४ सुखमां वर्त्ततो उतो पुःख दारिद्रने वीसारी मुके. ५५ अष्टप वस्तुनुं रक्षण करवा माटे घणो व्यय करे. ५६ वस्तुनी परीक्षा करवाने ऋषे विष स्नाय. ५७ धातुवादे करी कमाववा माटे धननो नाश करे. ५८ क्षयरोगी थको सायणना रसीयो बाय.

५९ पोतान मुखें पोतानी महोटाइ करतो फरे. ६० रीशे करी आपघात करवानी इच्छा करे. ६१ निरर्थंक फेरा खाय व्यर्थ जमतो फरे. ६१ तीर वागे तो पण जन्नो जन्नो युद्ध जोया करे. ६३ शक्तिमान साथें विरोध करी निश्चित सुवे. 48 स्वल्प धन होय तोपण घणो आमंबर करें. ६५ हुं पंक्तित छुं एम चितवतो वाचाल थाय. ६६ हुं सुजट छुं एवा गर्वथी निर्जय यको रहे. ६७ अतिस्तुर्तिये वखाण्यो थको उच्चाट आणे. ६८ वढवामना वचन बोखतो मर्भ प्रकाशे. ६९ जे दारीड़ी निधन होय तेना हाथमां धन छापे. ७० जे कार्य सिद्ध थवानो संदेह होय तेवा कार्यमां धनव्यय करे.

७१ धननो व्यय करी नामुं करती वेलाये लेखुं जोतां संदेह आणे जे खाटखुं द्रव्य केम खरचाइ गयुं?

७२ जे दैव करहो ते याहो एवी व्याशा करी वेशी रहे परंतु पुरुषार्थ कांइ पण करे नहि.

७३ दरीदी छतो जणजणनी पासे बेसे वाचाल थाय. ७४ बीजाये वार्यो थको जमदुंबीसारी मुके.

७५ गुणहीण बतो ख्रापणा कुलने प्रशंसे. ७६ सजामां बेठो थको ऋद्भवच्चे उठी जाय. ७७ दूत थइ जाय ख्रेंने संदेशो वीसारी मुके. ७८ जधरसनो व्याधि होयने चोरी करवाना चाले प्रवर्ते. ७ए कीर्त्तिने अर्थे महोटो जोजननो वरो करे. ८० पोतानी प्रशंसा माटे थोडुं जमे भुख सहे ८१ सीमा जयथी याचकने ख्यावतां वारे. ८२ क्रपणताने लीधे अपयश जपार्जन करे. ८३ प्रत्यक्ष दोषवाला माणसनां वलाण करे. ८४ साद घोघरो हतां गीत गावा बेसे. ८५ थोडुं जमे खने जमवानुं खतिरसयुक्त करे, ८६ चाटुक वचन बोलतो साहामानुं निराकरण करे. ८७ वेश्याना जे यार तेनी साथे कखह करे ८८ वे जण मंत्र त्रालोच करतां होय तिहां तेमनी

८९ राजानी प्रसाद पाम वते जाणे जे ए प्रसाद म-हारे निरंतर निश्चे रहेशे.

९० अन्याय करीने महाटाइनी वांछा करे.

पासे जइ वचमां उभी रहे.

ए१ धन हीन छतो जे जे कार्यधनथी थतां होय तेवा तेवा कार्यो करवानी वांछा करे.

९१ खोकोनी आगल पोतानुं तथा पारकुं गुह्य प्रकाश करतो फरे.

९३ कीर्त्तिने ऋर्थे ऋजाग्या माणसनो हामी थाय.

९४ जे हितशिक्षा करे, तेनी उपर मत्सर आणे.

९५ सर्व कोइनो विश्वास कर एटखे जेटछुं घोळुं तेट-खुं सर्वें दुधज हे, एम जाणे.

९६ खोक व्यवहार लोकाचारनी वात न जाणे.

९७ पोते भीखारी बतां जन्हुं जमवा वांबे

९८ पोते गुरु होय, पूज्य होय, महोटो होय, तेम उतां क्रियामां शिथिख थाय,परंतु सक्रियपणे न चाले.

९९ क्रुकर्म करी निर्लक्ष थाय, लोक लाज न करे.

१०० पोतेज वात करे अने पोतेज हसे.

ए उपर खलेला खक्षणे करी जे युक्त होय ते मूर्ख जाणवा. ए मूर्खनां सो खक्षण कह्यां.

क्षेत्रस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यः स्ट्रिस्ट्रिस् ॥ इति मूर्वशतकं समातं. ॥ स्ट्रिस्ट्रस्य सरस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य

श्री वराग्य शतक भाषांतर कथाओ साथ.

(आवृत्ती चार्थीः)

आ पुस्तकमां घणाज विस्तार्था वार्तारुपे अर्थ अने भावार्थ छखनामां आव्यो छे. पसंगे प्रसंगे वैराग्य उपर अति मुक्तक कुमारनी, छखनामां आव्यो छे. पसंगे प्रसंगे वैराग्य उपर अति मुक्तक कुमारनी, अहार नात्रानी, हथावस्थाना दुःख उपर धनासार्थवाहनी विगेरे मोटी मेटी ११ कथाओ आवी छे तेथीं आ पुस्तक वैराग्य दक्षाने जागृत करनारा स्त्री पुरुषोने घणुंज उपयोगी थइ पहयुं छे. आ पुस्तकनी दुंक मुद्दतमां पांचमी आवृत्ति थइ छे तेज तेना उपयोगी पुस्तकनी दुंक मुद्दतमां पांचमी आवृत्ति थइ छे तेज तेना उपयोगी गीपणानी विशेष खात्री छे. आ पुस्तकनी कीमत एक क्षीओ आठ आना राखी छे. जोइए तेमणे नीचेना शीरनामे छखवुं. ट्याल खर्च वी. पी. साथे त्रण आना.

जैन सूत्री.

विपाक सूत्र भाषांतर-मधम स्कंध-दुःख विपाकितसमें अञ्चभ कमें कि फळ दिखाने वाले दूश अध्यने का समावेश है. ०-८-उपाशक द्यांग सूत्र-खंड २ जो भाषांतर, जिसमें धर्मको उपासना करने वाले दश आत्रकाका इतिहास दिया हैं; ०-८-३ उपाशक दशांग सूत्र-खंड त्रीजो भाषांतर श्री निरयात्रिका उपाशक दशांग सूत्र-खंड त्रीजो भाषांतर श्री निरयात्रिका कल्पवडेसिया, पुष्कीआ, पुष्क तुळा और विन्दिशा नामक उपदेशी जैन शासका सार लिखा गया है.

नांचनी पोथीओ मंगाने लायक है.

श्री उतराध्ययन सुत्र, ६८८ ः गामकात्वाकातुं २-० आत्मसिद्धिवालः १०० केन दर्शननां मृळतत्या ०-४ आचारंग स्त्र. संध्यहक ६०० पानाना ३-८ सिदान्तसार वराग्य-वातक आचार मदिपक १-२जो१-४ सामाणिक प्रतिक्रमणं ७-१२ जैन पाटमाला ०-१२ ष्ट्रहालायणाञ्चा. ६ ई। ०-३ नित्य नियमरी पार्था आसित सोळपी जेनी स्ट 🗫 नकले। खर्पाछे - ४ संसाधिक प्रतिक्रमणसूत्र०-४ छुटकअध्ययनेाआ,त्री.०−२॥ अंत्रता सतीना राम.०-४ नारकीनां चीत्रानी ब.१-४ नानी चुक्क, ०−८ भाइतर्थिः सापार्वाकसूत्र ते आसुप्रि आवर्ता नवर्षा. हंसराज वच्छराजनोरास०-८ आनारंगमूत्र मूळ साथे भाणन्त देवकीया खटपुत्रनी रास ०-३ उत्रश्यन सत्र दश्वेकाळो**क मूळ सृत्र ०**-४ जैन दर्शननां मूळ तत्वो ०-४ जैन स्तृति पकरण संग्रह. आचार प्रदिष भाग १-२ दरकना १-8 जेन कथारत्न कोष भाग 3-3-8-6-0-6 दरेकना.

उपरनां पुस्तके। शिवाय दरेक पुस्तको फायदेशी मलवातुं ठेकाणुं— ं श्रीलाभाइ छगनलाल आह.

ठे. कीकाभटनी पोळ, अमदाबाद.